उपसंहार–अतः हममें से प्रत्येक का कर्तव्य है कि हम देश की एक अनूठी विशेषता– '**अनेकता में एकता**' का सम्मान करें और बहुत बलिदानों के बाद मिली इस स्वतंत्रता के मूल्य को पहचानकर सभी धर्मों, भाषाओं और संप्रदायों का आदर करें, तभी हम अपने देश को पुनः 'विश्वगुरु' तथा '**सोने की चिड़िया**' बना सकेंगे।

5. प्रदूषण की समस्या

लिखो व याद करो।

भूमिका–आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। विज्ञान ने जहाँ हमें अनेक प्रकार के वरदान दिए हैं, वहीं कुछ ऐसी समस्याएँ भी पैदा की हैं, जो आज भीषणतम अभिशाप बनकर हमारे अस्तित्व को ही समाप्त करने पर तुली हुई हैं। प्रदूषण भी उनमें से एक है।

प्रदूषण का अर्थ एवं कारण–प्रदूषण का अर्थ है–'दोषयुक्त'। आज का दूषित वातावरण, पर्यावरण या वायुमंडल भी प्रदूषित है। मनुष्य ने प्रकृति से जिस प्रकार छेड़-छाड़ की है, जिस प्रकार उसका अंधाधुंध दोहन किया है, उसी का दुष्परिणाम है–प्रदूषण।

प्रदूषण के प्रकार एवं वायु प्रदूषण–प्रदूषण मुख्यतः चार प्रकार का हो सकता है–वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और जल प्रदूषण। इनमें वायु प्रदूषण का सर्वाधिक प्रकोप महानगरों पर हुआ है। आज जिस तीव्र गति से औद्योगिकरण हुआ है, उसी गति से वायु प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुँए तथा राख से वायुमंडल प्रदूषित हो जाता है तथा नगरों में लोग शुद्ध वायु में साँस लेने को तरसते हैं।

जल प्रदूषण–इन्हीं कारखानों से निकलने वाले दूषित पदार्थ, कचरा या विषैला रसायन कुछ नदी, नालों में बहा दिया जाता है, जिससे उनका जल प्रदूषित हो जाता है। गंगा जैसी पवित्र नदी का जल भी आज प्रदूषित हो गया है। जब जल प्रदूषित होगा तो शुद्ध जल कहाँ से उपलब्ध होगा। प्रदूषित जल का सेवन करने से अनेक घातक रोग लग जाते हैं।

ध्वनि प्रदूषण–आज के महानगरों में वाहनों, मशीनों और कल-कारखानों के शोर के कारण ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। तेजी से आते-जाते वाहनों के शोर के कारण मानसिक तनाव तथा हृदय रोग, रक्तचाप जैसी व्याधियाँ जन्म ले रही हैं।

भूमि प्रदूषण–भूमि प्रदूषण के लिए भी आज का विज्ञान ही उत्तरदायी है। अधिक अन्न उगाने के लिए जिस प्रकार की रासायनिक खादों का प्रयोग किया जा रहा है, उससे भूमि प्रदूषित हो रही है। कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग से अनेक प्रकार की विपत्तियाँ मानव को सता रही हैं।

प्रदूषण का दुष्प्रभाव–प्रदूषण एक घातक समस्या है। जनसंख्या की अधिकता तथा इसके लिए आवास की समस्या को हल करने के लिए वृक्षों की जिस प्रकार अंधाधुंध कटाई की जा रही है, उससे प्रकृति भी नाराज होकर हमसे बदला लेती है। आज शुद्ध जल, शुद्ध वायु का नितांत अभाव होता जा रहा है। वायुमंडल में मिली जहरीली गैसें एक ऐसे विष का काम कर रही हैं जो धीरे-धीरे हमारे स्वास्थ्य को घुन की तरह खाए जा रहा है।

समाधान–प्रदूषण से बचने के लिए अधिक से अधिक वृक्षों का लगाया जाना बहुत आवश्यक है। इसके लिए युद्ध स्तर पर प्रयास किया जाना आवश्यक है। सरकार को ऐसे उद्योगों को आवासीय स्थानों से दूर लगाना चाहिए, जो प्रदूषण फैलाते हैं। वनों की कटाई पर रोक लगाना भी परमावश्यक है। सरकार को ऐसे कानून बनाने चाहिए, जिसमें स्पष्ट निर्देश दिए गए हों कि जो उद्योग प्रदूषण फैलाएगा, उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी। आज हम सबका कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित तथा स्वच्छ रखें।

...का ह्रास–आज हमारे देश में अनेक बुराइयाँ आ गई हैं। धर्म, जाति संप्रदाय और भाषा के नाम पर झगड़े होते रहते हैं तथा ...भी अपना सिर उठाती रहती है। नैतिक मूल्यों की कमी के कारण आज हमारे राष्ट्रीय चरित्र का पतन होता जा रहा है।

...संहार–अतः हममें से प्रत्येक का कर्तव्य है कि हम देश की एक अनूठी विशेषता–**'अनेकता में एकता'** का सम्मान करें और बहुत ...नों के बाद मिली इस स्वतंत्रता के मूल्य को पहचानकर सभी धर्मों, भाषाओं और संप्रदायों का आदर करें, तभी हम अपने देश को पुनः '...श्वगुरु' तथा **'सोने की चिड़िया'** बना सकेंगे।

5. प्रदूषण की समस्या

भूमिका–आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। विज्ञान ने जहाँ हमें अनेक प्रकार के वरदान दिए हैं, वहीं कुछ ऐसी समस्याएँ ...भी पैदा की हैं, जो आज भीषणतम अभिशाप बनकर हमारे अस्तित्व को ही समाप्त करने पर तुली हुई हैं। प्रदूषण भी उनमें से एक है।

प्रदूषण का अर्थ एवं कारण–प्रदूषण का अर्थ है–'दोषयुक्त'। आज का दूषित वातावरण, पर्यावरण या वायुमंडल भी प्रदूषित है। ...नुष्य ने प्रकृति से जिस प्रकार छेड़-छाड़ की है, जिस प्रकार उसका अंधाधुंध दोहन किया है, उसी का दुष्परिणाम है–प्रदूषण।

प्रदूषण के प्रकार एवं वायु प्रदूषण–प्रदूषण मुख्यतः चार प्रकार का हो सकता है–वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और जल ...दूषण। इनमें वायु प्रदूषण का सर्वाधिक प्रकोप महानगरों पर हुआ है। आज जिस तीव्र गति से औद्योगिकरण हुआ है, उसी गति से वायु ...दूषण भी बढ़ता जा रहा है। कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुँए तथा राख से वायुमंडल प्रदूषित हो जाता है तथा नगरों में लोग शुद्ध ...यु में साँस लेने को तरसते हैं।

जल प्रदूषण–इन्हीं कारखानों से निकलने वाले दूषित पदार्थ, कचरा या विषैला रसायन कुछ नदी, नालों में बहा दिया जाता है, जिससे ...नका जल प्रदूषित हो जाता है। गंगा जैसी पवित्र नदी का जल भी आज प्रदूषित हो गया है। जब जल प्रदूषित होगा तो शुद्ध जल कहाँ से ...पलब्ध होगा। प्रदूषित जल का सेवन करने से अनेक घातक रोग लग जाते हैं।

ध्वनि प्रदूषण–आज के महानगरों में वाहनों, मशीनों और कल-कारखानों के शोर के कारण ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। तेजी ...से आते-जाते वाहनों के शोर के कारण मानसिक तनाव तथा हृदय रोग, रक्तचाप जैसी व्याधियाँ जन्म ले रही हैं।

भूमि प्रदूषण–भूमि प्रदूषण के लिए भी आज का विज्ञान ही उत्तरदायी है। अधिक अन्न उगाने के लिए जिस प्रकार की रासायनिक खादों का प्रयोग किया जा रहा है, उससे भूमि प्रदूषित हो रही है। कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग से अनेक प्रकार की विपत्तियाँ मानव को सता रही हैं।

प्रदूषण का दुष्प्रभाव–प्रदूषण एक घातक समस्या है। जनसंख्या की अधिकता तथा इसके लिए आवास की समस्या को हल करने के लिए वृक्षों की जिस प्रकार अंधाधुंध कटाई की जा रही है, उससे प्रकृति भी नाराज होकर हमसे बदला लेती है। आज शुद्ध जल, शुद्ध वायु का नितांत अभाव होता जा रहा है। वायुमंडल में मिली जहरीली गैसें एक ऐसे विष का काम कर रही हैं जो धीरे-धीरे हमारे स्वास्थ्य को घुन की तरह खाए जा रहा है।

समाधान–प्रदूषण से बचने के लिए अधिक से अधिक वृक्षों का लगाया जाना बहुत आवश्यक है। इसके लिए युद्ध स्तर पर प्रयास किया जाना आवश्यक है। सरकार को ऐसे उद्योगों को आवासीय स्थानों से दूर लगाना चाहिए, जो प्रदूषण फैलाते हैं। वनों की कटाई पर रोक लगाना भी परमावश्यक है। सरकार को ऐसे कानून बनाने चाहिए, जिसमें स्पष्ट निर्देश दिए गए हों कि जो उद्योग प्रदूषण फैलाएगा, उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी। आज हम सबका कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित तथा स्वच्छ रखें।